आचार्य भास्करनन्दि

जीवन-परिचय : 'तत्त्वार्थसूत्र' के टीकाकारों में भास्करनन्दि का अपना स्थान है। भास्करनन्दि के गुरु का नाम जिनचन्द्र और जिनचन्द्र के गुरु का नाम सर्वसाधु था। भास्करनन्दि आचार्य पूज्यपाद, आचार्य अकलंक और आचार्य विद्यानन्द के पश्चात् हुए हैं। ये सिद्धान्त ग्रन्थों के ठोस विद्वान हैं।

भास्करनन्दि का समय विक्रम संवत् 16वीं शती है।

रचना-परिचय : भास्करनन्दि की एक रचना उपलब्ध है—

1. तत्त्वार्थसूत्रवृत्ति-सुखबोधटीका : इस टीका ग्रन्थ का प्रकाशन मैसूर विश्वविद्यालय ने किया है। टीकाकार ने आचार्य पूज्यपाद, भट्ट अकलंकदेव और विद्यानन्द स्वामी की टीकाओं का भी आधार ग्रहण किया है। इस टीका की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(1) विषय स्पष्टीकरण के साथ नवीन सिद्धान्तों की स्थापना।

(2) पूर्वाचार्यों द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों का अपने रूप में प्रस्तुतीकरण।

(3) ग्रन्थ के अन्दर के उदाहरणों का भी प्रस्तुतीकरण।

(4) मूल मान्यताओं का विस्तार।

(5) पूज्यपाद की शैली का अनुसरण करने पर भी मौलिकता का समावेश।